समाजीकरण में एस० फ्रायड का सिद्धान्त
(Theory of S. FREUD in socialization)

फ्रायड ने समाजीकरण की प्रक्रिया को 'मानसिक प्रक्रियाओं' के आधार पर स्पष्ट किया है। फ्रायड एक मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने मानव व्यवहारों को अचेतन मानसिक शक्तियों के अधीन माना है। उनके अनुसार व्यक्ति को जीवन के विभिन्न स्तरों पर अनेक तरह की निराशाओं का सामना करना होता है, जिनमें छुटकारा पाने के लिए व्यक्ति को हमेशा समायोजन करना पड़ता है। समायोजन की इसी प्रक्रिया को उन्होंने समाजीकरण की प्रक्रिया कहा है। यह प्रक्रिया किस प्रकार कार्य करती है तथा व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में सामाजिक मान्यताओं को किस प्रकार ग्रहण करता है, इसकी व्याख्या उन्होंने मानव मस्तिष्क के संदर्भ में दी है।

फ्रायड का मानना है कि मानव व्यवहार मूल रूप से दो परस्पर विरोधी शक्तियों- प्रेम और घृणा से प्रभावित होते हैं। प्रेम एक ऐसी शक्ति है जो समाज के अनुकूल कार्य करने को प्रेरित करती है। इसलिए इसे जीवन शक्ति कहा जाता है। घृणा एक ऐसी शक्ति है जो व्यक्ति को समाज-विरोधी कार्य करने को प्रेरित करती है। इसलिए इसे संहारक शक्ति कहा जाता है। साधारणतया प्रेम का घृणा पर अधिपत्य रहता है, लेकिन जब कभी प्रेम का प्रभाव कम हो जाता है तथा घृणा का प्रभाव बढ़ जाता है, तब व्यक्ति में असुरक्षा भय, तनाव, चिन्ता आदि के तत्व प्रबल हो जाते हैं। व्यक्ति में पाशविक प्रवृत्तियाँ बन जाती हैं। इसी के अधीन व्यक्ति अनेक तरह के समाज-विरोधी कार्य करते हैं। व्यक्तित्व के समुचित विकास के लिए व्यक्ति में प्रेम व घृणा रूपी शक्तियों में सामंजस्य का होना

आवश्यक है।

फ्रायड का कहना है कि प्रेम व घृणा का विकास सदैव एक ही रूप में दिखाई नहीं देता, बल्कि इसका संबंध मन के अनेक भागों से है। फलस्वरूप इसकी अभिव्यक्ति के तरीके भी भिन्न रूप से स्पष्ट होते है। इसे स्पष्ट करने के लिए फ्रायड ने मानव-मस्तिष्क के तीन रूप बतलाए है — अचेतन मन, अवचेतन मन और चेतन मन। इसकी व्याख्या निम्नलिखित है! —

(1) अचेतन मन! — (Unconscious Mind): — यह मन का ऐसा भाग है जिसकी जानकारी व्यक्ति को नहीं रहती। अचेतन के विचार एवं इच्छाएँ न तो व्यक्ति को मालूम रहती है और न कोशिश करने पर यह मालूम हो पाता है। फ्रायड के अनुसार, अचेतन मन के अनुभव व विचार चेतना से तिरस्कृत होकर अचेतन मन में चले जाते है, क्योंकि वे अनैतिक, अतार्किक और लैंगिक होते है।

(2) अवचेतन मन (Sub-Conscious Mind): — यह मन का वह भाग है जिसकी जानकारी व्यक्ति को वर्तमान में नहीं रहती, परंतु कोशिश करने पर उसकी चेतना हो जाती है। यह अचेतन मन की तरह पूर्णतया सुप्तावस्था में नहीं होती।

(3) चेतन मन (Conscious Mind): — यह मन का वह भाग है जिसकी जानकारी व्यक्ति को वर्तमान में रहती है। व्यक्ति को जिन इच्छाओं, विचारों, घटनाओं आदि की वर्तमान चेतना रहती है, वे सभी इसके चेतन मन की विषय में है। उदाहरणस्वरूप :- जब हम सड़क पर चल रहे होते है, तो सड़क एवं उसके आस-पास की चीजों का ज्ञान चेतन मन के द्वारा ही होगा।

फ्रायड ने अचेतन प्रक्रियाओं पर विशेष जोर दिया। उनका मानना है कि समस्त मानसिक जीवन अचेतन की शक्ति से परिचालित होता है। अचेतन अतृप्त प्रेरकों का भंडार है, उसमें बाल्यावस्था या बाल्यकाल की दमित अतृप्त इच्छाएँ रहती है। उनके अनुसार मनुष्य की दमित इच्छाएँ अचेतन में चली जाती है और वहाँ से अभिव्यक्ति के सुअवसर ढूँढा करती है। इसमे अधिकांश इच्छाएँ कामुक होती है। ये कामुक इच्छाएँ ही मानव के अनेक कार्यों का कारण है। इस कामाग्नि को फ्रायड ने 'लिबिडो' (Libido) कहा है। लिबिडो मानव की प्रेरक शक्ति है।

व्यक्तित्व संरचना में फ्रायड ने तीन तत्वों का उल्लेख किया है — इड, इगो और सुपर इगो।

(1) कामतत्व (ID):—
यह मन की वह अचेतन शक्ति है जो व्यक्ति को सुख प्राप्त करने की प्रेरणा देती है। इसके सामने अच्छा-बुरा, नैतिक-अनैतिक, मूल्य-अमूल्य आदि का कोई महत्व नहीं होता।

(2) अहम (Ego):—
यह वह शक्ति है जो व्यक्ति को सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप मध्यस्थता करता है, परन्तु इसमें भी नैतिक-अनैतिक, मूल्य-अमूल्य आदि की महत्ता स्पष्ट होती है। फ्रायड ने इसे अंशतः चेतन और अंशतः अचेतन माना है।

(3) पराअहम (Super Ego):—
साधारण शब्दों में इसे अन्तर्चेतना कहा जा सकता है। इसे अहम का आदर्श भी कहा जाता है। पराअहम का संबंध सामाजिक मूल्यों

तथा विवेक से है। इसका विकास समाज में अन्य व्यक्तियों के सम्पर्क में आने एवं उनके अनुरूप अपने व्यवहार में परिवर्तन लाने के फलस्वरूप होता है।

फ्रायड के व्यक्तित्व संरचना के इन तत्वों को एक उदाहरण के माध्यम से समझा जा सकता है। कोई व्यक्ति भूखा है। उसका इड कहेगा कि भूखा रहकर मरने से अच्छा है किसी के यहाँ चोरी करो और भूख की तृप्ति करो। क्योंकि इड पूर्णतः अचेतन व सुखवादी होता है। उसका इगो कहेगा कि बरदाश्त करो, नहीं बरदाश्त कर सकोगे तब चोरी करो। लेकिन यह ध्यान में रहे कि कोई देखे नहीं और न पुलिस की पकड़ में आना क्योंकि इगो सामाजिक परिस्थितियों व इड संबंधी व्यवहार में सामंजस्य लाने का प्रयत्न करता है। सुपर इगो कहेगा कि चोरी कभी न करो, ऐसा सोचना या करना पूर्णतया अनैतिक है।

आलोचना (criticism) :—

① फ्रायड ने मस्तिष्क के जिन तीन भागों — अचेतन मन, अवचेतन मन तथा चेतन मन का उल्लेख किया है, उन्हें जीवशास्त्रियों ने मस्तिष्क की बनावट में किसी प्रकार भी विद्यमान नहीं पाया है। यही कारण है कि फ्रायड की उपरोक्त व्याख्या को दार्शनिकता के रूप में समझा जाता है।

② फ्रायड ने समाजीकरण की प्रक्रिया को पूर्णतया मानसिक दशाओं के संदर्भ में प्रस्तुत किया है। इनका मानना है कि मानसिक दशाएँ ही मानव व्यवहारों को निर्धारित करती है।

③ फ्रायड ने व्यक्तित्व संरचना के तीन तत्वों - इड, इगो और सुपर इगो की व्याख्या के संदर्भ में बतलाया कि इगो वास्तविकता के सिद्धान्त के अनुसार काम करने वाला होता है।